Class 10 Subject: hindi (kshitij)

Topic -ch-6(जयशंकर प्रसाद

प्रश्न/उत्तर करो।

प्रश्न 3.
जयशंकर प्रसाद के किन्हीं तीन काव्य संग्रहों के नाम बताइए?
उत्तर:
कवि जयशंकर प्रसाद के तीन काव्य संग्रह हैं 1. लहर 2. झरना तथा 3. चित्राधार।

प्रश्न 4.
ईश्वर की प्रशंसा का राग कौन गा रहा है?
उत्तर:
ईश्वर की प्रशंसा का राग तरंगमालाएँ गा रही हैं।

प्रश्न 5.
मनुष्य के मनोरथ कबे पूर्ण होते हैं?
उत्तर:
मनुष्य के मनोरथ दयामय ईश्वर की दया होने पर ही पूर्ण होते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 6.

अंशुमाली का क्या अर्थ है?

उत्तर:

अंशुमाली का अर्थ सूर्य है।

RBSE Class 10 Hindi Chapter 6 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 7.

'प्रकृति-पद्मिनी के अंशुमाली' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर:

सूर्य के उदय होने पर ही कमलिनी खिला करती है। खिलना.प्रसन्नता का द्योतक होता है। कवि ने ईश्वर को प्रकृति के चराचर सभी पदार्थों को प्रसन्न करने वाला बताया है। यही उस कथन का आशय है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 8.

कवि ने ईश्वर को अनादि क्यों कहा है?

उत्तर:

ईश्वर को ही इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड का सृजनकर्ता माना जाता है। अत: इस सृष्टि से पहले भी ईश्वर विद्यमान था। इसी कारण कवि ने ईश्वर को 'अनादि' अर्थात् जिसका प्रारम्भ या उपस्थिति किसी को ज्ञात न हो, ऐसा बताया है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9.

यामिनी में अनूठा पता कौन बता रही है?

उत्तर:

यामिनी अर्थात् रात्रि में आकाश में जगमगाते असंख्य तारों की ज्योति ईश्वर के अनूठे (अद्भुत) स्वरूप का संकेत कर रही है। भाव यह है कि रात्रि में तारों से भरा आकाश यह संकेत करता है कि उस परम प्रभु का दीपकों की पंक्तियों से प्रकाशित विशाल मंदिर कैसा होगी।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 10.

दयानिधि से क्या तात्पर्य है?

उत्तर:

दयानिधि से तात्पर्य ऐसे ईश्वर से है जिसके हृदय में सृष्टि के सारे जीवों के लिए अपार करुणा भरी हुई है। जो किसी को भी अपनी दया से वंचित नहीं रखता। सभी प्राणियों के सभी मनोरथों को पूर्ण किया करता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 11.

'प्रभो' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

'प्रभो' कविता में कवि जयशंकर प्रसाद ने अपनी भावुक वाणी में परमेश्वर के विराट और परम उदार स्वरूप के दर्शन कराए हैं। कविता में कवि ईश्वर को चन्द्रमा की निर्मल किरणों के समान प्रकाशमान बता रहा है। सारी सृष्टि उसी की मनोहारिणी लीला है। सागर उसकी अपार दया का और तरंगमालाएँ उसकी महानता का दर्शन करा रही हैं। कवि ने उसकी मुस्कान चाँदनी जैसी और हँसी की ध्वनि को नदियों की कल-कल ध्वनि के समान बताया है।

आकाश में रात को दमकते असंख्य तारे उस ईश्वर के रात में दीपों से जगमगाते विशाल मंदिर का आभास कराते हैं। कवि ने ईश्वर को संपूर्ण प्रकृति को आनंदमय बनाने वाला तथा संपूर्ण सृष्टि का संरक्षक बताया है। कवि का दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर की दया से जीव की सारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 12.

'प्रभो' कविता की भाषा की विशेषताएँ बताइए?

उत्तर:

'प्रभो' कविता की भाषा कवि जयशंकर प्रसाद की प्रतिनिधि भाषा तो नहीं कही जा सकती, किन्तु यह तत्सम तथा तद्भव शब्दावली का बड़ा सहज सम्मिलने प्रस्तुत करती है। |

कविता की भाषा में जहाँ विमल, इन्दुप्रसार, तरंग, स्मित, निनाद, अंशुमाली आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है, वहीं इनके साथ कवि ने 'बता रही', देखे, प्यारे, निरखना, धुन, अनूठा, माली, होने आदि तद्भव शब्दों का भी बिना किसी संकोच के प्रयोग किया है।

भाषा में सहज प्रवाह और अर्थ-गाम्भीर्य है। कवि ने अपने मनोभावों के प्रकाशन के लिए 'लोक गान' जैसे शैली अपना कर भाषा के प्रवाह को गति प्रदान की है।

Scanned with CamScanner

भाषा में 'जिसे देखना हो दीपमाला' जैसे वाक्य भाव को समझ पाने में सामान्य पाठक के व्याकरण के ज्ञान की परीक्षा ले रहे हैं। 'होवे' क्रियो हिन्दी के पुराने स्वरूप का स्मरण कराती है। संक्षेप में प्रभो कविता की भाषा कुछ अलग ही छटा लिए हुए है। इस भाषा से, प्रसाद जी की हर प्रकार की भाषा के प्रयोग में दक्षता भी प्रमाणित हो रही है।

Scanned with CamScanner